विद्या भवन गोविंदराम सेकसरिया शिक्षक महाविद्यालय, उदयपुर

न्यूज़ लेटर

मार्च, 2024

प्राचार्य की कलम से :

''यदि शिक्षा सामाजिक रूप से उपयोगी उत्पादक कार्यों पर आधारित हो तो वह व्यक्तित्व विकास और सामाजिक परिवर्तन का एक साधन होगी।'' –महात्मा गांधी

समाजोपयोगी उत्पादक कार्य शिविर का आधार आजादी से पहले कल्पना में आ गया था, जो कि आज भी उतना ही प्रासंगिक है, इसलिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 ने कौशल विकास, आनुभाविक शिक्षा पर जोर दिया। इस तरह का शिविर ज्ञान को शिल्प से और सिद्धान्त को व्यवहार से जोड़कर उत्पादक एवं आत्मनिर्भर नागरिक तैयार करने के लिए आवश्यक है। यह औपचारिक शिक्षा और समुदाय के बीच अलगाव को पाटकर वास्तविक जीवन से संबंधित तथ्य आधारित (Evidence Based) सीखने का अवसर देता है।

समाजोपयोगी उत्पादक कार्य शिविर कार्य अनुभव शिक्षा का एक उपकरण है, जो कि शिक्षा के व्यावहारिक दृष्टिकोण पर आधारित है। 21वीं सदी की तेजी से बदलती दुनिया में यह बहुत आवश्यक है कि हमारे विद्यार्थियों में समाज की कार्यप्रणाली (कार्यों, प्रक्रियाओं, सेवाओं, मुद्दों) की निरन्तर समझ, पूछताछ क्षमता, समूह में कार्य करना, सहयोग, संवाद, रचनात्मकता तथा श्रम की गरिमा का विकास हो, जिससे वे एक उद्देश्यपूर्ण (Visionary) और प्रोग्रेसिव इंसान बन सकें। वे अपनी सफलता, संतुष्टि, खुशहाली में अपने अध्यापक, अभिभावक, पड़ोस, समुदाय तथा ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट करे तथा परस्पर सम्मान व साझा संस्कृति अपनाकर समाज को आगे बढ़ाने में अपना सकारात्मक योगदान दे सकें। विद्या भवन वैयक्तिक स्वतन्त्रता, श्रम की गरिमा, आत्मनिर्भरता, उत्पादकता तथा कौशलों के विकास हेतु सदैव प्रतिबद्ध रहा है। इसके लिए यहां की गतिविधियों तथा शिविरों में अपने कार्य के प्रति लगाव, जज़्बा, कौशल एवं सामाजिक कल्याण का भाव सदैव परस्पर अन्योन्याश्रित संतुलन के रूप में निहित होता है।

–डॉ. फरज़ाना इरफान

संपादन

सलाहकार– डॉ. जितेंद्र तायलिया, डॉ. अनुराग प्रियदर्शी

प्राचार्य– डॉ. फरज़ाना ईरफान

संपादक – डॉ. गिरीश शर्मा

प्रूफ रिडिंग – डॉ. जगदीश चंद्र आमेटा

ले–आउट, डिजाईनिंग – चिराग धुप्या

विद्या भवन गोविन्दराम सेकसरिया शिक्षक महाविद्यालय,
डॉ. मोहनसिंह मेहता मार्ग, देवाली उदयपुर, राजस्थान

ई–मेल vbcteudr@gmail.com, 0294–2451814

Website-www.vidyabhawan.in

बजट पर बैठक

दिनांक 5 मार्च, 2024। महाविद्यालय के बजट के संबंध में मुख्य संचालक के साथ कर्मचारियों की बैठक हुई। बैठक में मुख्य संचालक ने कहा कि हमें बिना नुकसान वाली स्थिति में जाकर नए आय स्रोत के लिए और अधिक विकल्प और विचारों की खोज करनी चाहिए। उन्होंने महाविद्यालय में एम.एड. के छात्रों की संख्या बढ़ाने का सुझाव दिया। आईटीईपी पाठ्यक्रम की समबद्धता के लिए उन्होंने विद्या भवन रूरल इंस्टीट्यूट के साथ मिलकर योजना बनाने की बात कही। बैठक में पिछले सत्र के आय और व्यय पर भी चर्चा की गई। कर्मचारियों ने सुझाव दिया कि हमें छात्रावास के लिए पूर्णकालीन योजना बनानी चाहिए। साथ ही पूंजीगत व्यय और नवीकरण व्यय की हमारी वित्तीय स्थिति के बारे में विचार करना चाहिए। मुख्य संचालक अनुराग प्रियदर्शी ने कहा कि हमें हमारी संस्था और छात्रावास के लिए बिना किसी नुकसान की स्थिति हासिल करने के लिए अधिक आय के स्रोत खोजने चाहिए ताकि हम अर्थिक रूप से स्वावलंबी हो सके।

स्कूली शिक्षा पर कार्य करने की आवश्यकता

दिनांक 7 मार्च, 2023। महाविद्यालय में महाविद्यालय स्तर पर एक बड़े प्रोजेक्ट लेने के संदर्भ में बैठक आयोजित की गई। बैठक में प्रो. एम. पी. शर्मा, प्रो. डी.एन. दानी के साथ संकाय सदस्यों ने भाग लिया। प्रो. दानी ने स्कूल शिक्षा पर कार्य करने की आवश्यकता जताई। उन्होंने कहा कि जब भी अध्यापक शिक्षा पर एनसीएफ आता है, उस पर कार्यशाला की जानी चाहिए। यह कार्यशाला स्कूली अध्यापकों एवं अध्यापक शिक्षकों के साथ की जा सकती है। उन्होंने 'नेक' की तैयारियों का भी जायजा लिया। प्रो. शर्मा ने सुझाव दिया कि महाविद्यालय में गाईडेंस एंड काउंसलिंग का कोर्स शुरू किया जा सकता है। साथ ही बी.एड. के विद्यार्थियों के लिए प्रबंधन और मूल्यों आदि से संबंधित छोटे–छोटे कोर्स शुरू किए जा सकते हैं। उन्होंने कहा कि एनटीटी की कार्यशाला एवं प्रशिक्षण के बारे में भी सोचा जाना चाहिए। सेवा प्रसार विभाग को नई शिक्षा नीति के संदर्भ में मजबूत किया जाना चाहिए तथा एनसीएफ के कोर क्षेत्रों को स्कूलों के अध्यापकों तक पहुंचाया जाना चाहिए। बैठक में सीसीआरटी व साहित्य कला अकादमी को प्रोजेक्ट भेजने, स्टूडेण्ट वेलफेयर कोर्स चलाने और नई शिक्षा नीति के संदर्भ में विद्यालयों की वस्तु स्थिति को जानने के लिए बेस लाईन सर्वे किए जाने के सुझाव आए।

इंटर्नशिप पूर्ण, कक्षाएं प्रारंभ

दिनांक 11 मार्च, 2024। महाविद्यालय के प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों की 28 दिवसीय इंटर्नशिप पूर्ण हुई। इंटर्नशिप पूर्ण कर विद्यार्थी महाविद्यालय में आए और अपने ट्यूटोरियल में रिपोर्ट दी। विद्यार्थियों ने ट्यूटोरियल में इंटर्नशिप से संबंधित अपने अनुभव साझा किए। वे अब आवश्यक दस्तावेज जमा करवाएंगे। इंटर्नशिप के पश्चात थ्योरी की कक्षाएं प्रारंभ हुई तथा साथ में एसयूपीडब्ल्यू शिविर की तैयारियां भी शुरू हुई।

एसयूपीडब्ल्यू अभिविन्यास कार्यक्रम

दिनांक 16 मार्च, 2024। महाविद्यालय, में बीएड एवं एमएड के विद्यार्थियों के लिए समाजोपयोगी उत्पादक कार्य शिविर का अभिविन्यास कार्यक्रम हुआ। शिविर से पूर्व दो दिवसीय अभिविन्यास कार्यक्रम में सामुदायिक गतिविधियों, सर्वे कार्य, सांस्कृतिक कार्यक्रम, प्रदर्शनी के संबंध में संकाय सदस्यों ने सत्र लिए। प्राचार्य डॉ. फरज़ाना ईरफान ने विद्यार्थियों को संबोधन दिया एवं

शिविर संयोजक डॉ. खीमाराम काक ने शिविर से संबंधित महत्वपूर्ण निर्देश दिए।

शिविर का उद्घाटन, सर्वे कार्य किया

दिनांक 18 मार्च, 2024। शिविर के प्रथम दिन दिनांक 18 मार्च 2024 को प्रातः 8.30 बजे शिविर का प्रारम्भ दीप प्रज्वलन के साथ सरस्वती वन्दना से हुआ। स्वागत उद्बोधन करते हुए प्राचार्य डॉ. फरजाना इरफान ने समाजोपयोगी उत्पादक कार्य की आवश्यकता एवं महत्त्व पर प्रकाश डाला और विद्यार्थियों को कौशल विकसित करने हेतु अभिप्रेरित किया। उन्होंने कहा कि किसी भी कार्य को करने में उस कार्य के प्रति लगाव, समाज के लिए उपयोगिता, आजीविका से जुड़ाव और कार्य में कुशलता जरूरी है। जब इन चारों में संतुलन होगा तो वह कार्य हमें संतुष्टि प्रदान करेगा। यह संतुष्टि हमें खुशहाल जीवन की ओर ले जाएगी। अतः जब भी हम कार्य करें इन चारों में संतुलन बनाने का प्रयास करें। कार्यक्रम प्रभारी डॉ. खीमाराम काक ने शिविर के दौरान आयोजित होने वाली प्रमुख गतिविधियों की रूपरेखा को प्रस्तुत किया। सभी छात्रों को विभिन्न दस परिषदों इतिहास, हिंदी एवं संस्कृत, सामाजिक विज्ञान, राजनीति विज्ञान, हिंदी, हिंदी एवं अंग्रेजी, भूगोल, अर्थशास्त्र एवं वाणिज्य, विज्ञान–अ, विज्ञान–ब एवं एम.एड. परिषदों में विभक्त किया गया।

सभी छात्रों ने अपने–अपने परिषद् प्रभारियों के मार्गदर्शन में देवाली, नीमच खेडा, परशुराम कॉलोनी, मनोहरपुरा, नीमच माता स्कीम, ट्रेजर टाउन कच्ची बस्ती में घर–घर जाकर वहां की शैक्षिक, सामाजिक, रोजगार, पर्यावरण, हिंदी उच्चारण, स्थानीय भौगोलिक परिस्थितियों की पहचान एवं घरों में तकनीकी के इस्तेमाल का

सर्वे द्वारा वस्तुस्थिति का अध्ययन किया। छात्रों द्वारा यहां के नागरिकों को सामुदायिक गतिविधियों के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण, बालिका शिक्षा के प्रति जागरूकता, बिजली बचत,

प्लास्टिक के इस्तेमाल कम करने, जल की बचत के प्रति जागरूक किया। भूगोल परिषद् के विद्यार्थियों ने महाविद्यालय में ही रह कर खुले मैदान में छड़ी गाढ़कर उसकी परछाई से स्थानीय समय की गणना की और मानक समय से उसका अंतर पता किया। भूगोल परिषद् के विद्यार्थियों ने महाविद्यालय में मौसम प्रेक्षणशाला स्थापित कर स्थानीय मौसम संबंधी दशाओं का भी अध्ययन किया।

योग एवं पर्यावरण जागरूकता

दिनांक 19 मार्च, 2024। शिविर दूसरे दिन प्रार्थना के साथ प्रारंभ हुआ। प्रार्थना सभा के बाद योग एवं ध्यान का सत्र हुआ। सत्र डॉ. संतोष राठौर ने लिया। इस मौके पर उन्होंने कहा कि योग मात्र व्यायाम नहीं है। यह व्यक्ति के जीवन की सफलता का राजमार्ग है। योग द्वारा सात्विक सफलता संभव है। उन्होंने विद्यार्थियों एवं संकाय सदस्यों को योग एवं ध्यान का अभ्यास करवाया। इस दौरान उन्होंने ध्यान के लिए आवश्यक निर्देश भी दिए। तत्पश्चात विद्या भवन पोलिटेक्निक कॉलेज के प्राचार्य डॉ. अनिल मेहता ने "पर्यावरण के प्रति नैतिक जागरूकता" विषय पर विद्यार्थियों को सम्बोधित किया। उन्होंने कहा कि प्रदूषण से बचना है तो उपभोग की प्रवृति पर अंकुश लगाना होगा। उन्होंने नैतिकता का अर्थ "एक अच्छा व्यवहार" बताया। प्रकृति के प्रति करुणा, स्नेह, संवेदनशीलता, सेवा के भाव ही

सच्चा नैतिक व्यवहार है। उन्होंने कहा कि प्राकृतिक संसाधनों के अधिकतम खपत के बजाय अधिकतम बचत के दृष्टिकोण से ही पेड़, पानी, मिट्टी, हवा, पहाड़ झीलें, नदियां सुरक्षित रह पाएंगे। हमने हमारे बुजुर्गो की सम्यक जीवन, सम्यक आचरण व सम्यक व्यवहार की सीख को भूला दिया है। हमारी पूर्व पीढ़ियों ने प्रकृति के साथ संतुलित व्यवहार किया। वेद, उपनिषद, गीता, रामायण, कुरान, बाइबिल इत्यादि धर्मशास्त्रों में वर्णित पर्यावरणीय सिद्धांतो का उल्लेख करते हुए कहा कि धर्म शास्त्र पर्यावरण के प्रति नैतिक व्यवहार की सीख देते हैं।

अध्ययन कार्य

दिनांक 19 मार्च, 2024। शिविर के दूसरे सत्र में सभी परिषदों के विद्यार्थियों ने अपने–अपने समूह में कार्य किया। पहले दिन किए गए सर्वे कार्य के

आंकड़ों की तालिका बनाई। उनका विश्लेषण किया और फिर चार्ट एवं रिपोर्ट के रूप में प्रस्तुत किया।

शाम के सत्र में डॉ. जयदेव पानेरी के निर्देशानुसार खेल संबंधी गतिविधियों के अंतर्गत हमारे परंपरागत खेलों का आयोजन किया गया। परंपरागत खेलों के लिए शिविर में दो दिन निर्धारित किए गए। पहले दिन इंडोर एवं आउट डोर दोनों प्रकार के खेल खेले गए जबकि दूसरे दिन आउट डोर गेम रखे गए। खेलों के लिए परिषदवार खेलने की बाध्यता नहीं रखी गई। विद्यार्थियों ने स्वतंत्र रूप से दूसरे परिषदों के विद्यार्थियों के साथ मिल कर खेल खेले। इस दौरान संकाय सदस्यों ने भी सहभागिता की और विद्यार्थियों का मार्गदर्शन किया। पारंपरिक खेलों में सोलह हार, चंगाबीत्ती, संख्या मिलान, घर बनाना, कांकर–कंकर, कोड़ा है संभाल भाई, सित्तोलिया, चिड़िया उड़, रूमाल झपटनी आदि शामिल थे। दूसरे दिन ताश पत्ती खोजों वाला खेल खेला गया।

वार्ता, सामुदायिक कार्य व श्रमदान

दिनांक 20 मार्च, 2024। शिविर के तीसरे दिन प्रार्थना सभा में जिला अपर न्यायाधीश कुलदीप शर्मा ने सीनियर सिटीजन एक्ट एवं पोक्सो एक्ट की जानकारी दी। उन्होंने महिला लैंगिक

उत्पीड़न समिति, बाल विवाह हेल्पलाइन नंबर–181, शक्ति संबल योजना,धारा 33 (8) एवं धारा 186(3) के बारे में विस्तार से चर्चा की। वार्ता के बाद विद्यार्थियों ने श्रमदान किया। शिविर के अंतर्गत सामाजिक विज्ञान परिषद् को समाजोपयोगी उत्पादन कार्य के अंतर्गत सामुदायिक कार्य की जिम्मेदारी दी गई। परिषद् प्रभारी डॉ. प्रीति गहलोत एवं बीना लौहार के सान्निध्य में परिषद् के छात्राध्यापकों ने महाविद्यालय में श्रमदान एवं सौंदर्यीकरण की रूपरेखा बनाई। महाविद्यालय परिसर को छोटे–छोटे भागों में बांट कर अलग–अलग

परिषद्ों को जिम्मेदारियां सौंप कर श्रमदान एवं सौंदर्यीकरण की जिम्मेदारी सौंपी। परिषद्ों के प्रभारी एवं छात्राध्यापकों ने व्यवस्थित रूप से कार्य किया। कार्य के अंतर्गत सफाई करना, परिण्डे लगाना, पौधों के नाम की तख्तियां लगाना, बगीचे से कचरा साफ करना, पत्तियां हटाना, कचरा पात्र बनाकर लगाना, अनुपयोगी प्लास्टिक बोटल से गमले बनाकर उनमें पौधे लगाना आदि।

अध्ययन कार्य एवं प्रदर्शनी

दिनांक 21 मार्च, 2024। शिविर का चौथा दिन प्रार्थना एवं योगाभ्यास के साथ प्रारंभ हुआ। इसके बाद सभी परिषद्ों के विद्यार्थी अपने–अपने समूहों में गए तथा अपने मार्गदर्शकों के निर्देशन में प्रदर्शनी के लिए चार्ट्स एवं रिपोर्ट को अंतिम रूप दिया गया। ब्रेक के बाद सभी छात्रों ने आवंटित स्थलों पर अपनी अपनी परिषद् के चार्ट्स एवं सामुदायिक गतिविधियों के चार्ट्स को प्रदर्शित किया गया। समाजोपयोगी उत्पादक कार्य शिविर में विद्यार्थियों ने विभिन्न गतिविधियों में भाग लिया जिसमें सर्वेक्षण कार्य, सामुदायिक कार्य समुदाय में एवं महाविद्यालय में श्रमदान, पौधारोपण एवं परिसर सौंदर्यीकरण का कार्य किया। इन सभी कार्यों को प्रदर्शनी के माध्यम से प्रदर्शित किया गया। प्रदर्शनी से पूर्व सभी विद्यार्थियों ने उनको दिए गए नियत स्थान पर परिषद्वार व्यवस्थित रूप से चार्ट लगाने का कार्य किया। प्रदर्शनी में 10 परिषद् के सर्वेक्षण कार्य एवं सामुदायिक कार्य को प्रदर्शित किया गया जिसमें उन्होंने अपने सर्वेक्षण कार्य की संक्षिप्त रिपोर्ट भी प्रस्तुत की।

प्रदर्शनी का उद्घाटन महाविद्यालय कार्यकारिणी के सदस्य डॉ. अनिल कोठारी, महाविद्यालय के पूर्व प्राचार्य डॉ. एम.पी. शर्मा एवं डॉ. सुषमा तलेसरा तथा महाविद्यालय प्राचार्य डॉ. फरजाना इरफान ने फीता खोलकर किया। दीप प्रज्वलन के पश्चात अतिथियों एवं संकाय सदस्यों ने प्रदर्शनी का अवलोकन किया। उन्होंने विद्यार्थियों द्वारा प्रदर्शनी में लिए गए विषयों की प्रशंसा की और सर्वेक्षण कार्य पर चर्चा कर आवश्यक सुझाव दिए। प्रदर्शनी का आयोजन हिंदी परिषद् ने किया जिसके प्रभारी डॉ. संतोष उपाध्याय एवं नरेंद्र प्रजापत थे। विद्यार्थियों ने भी प्रदर्शनी का अवलोकन किया एवं विभिन्न विषयों की जानकारी प्राप्त की और एक दूसरे के द्वारा किए गए कार्यों के बारे में जाना एवं अपने विचार साझा किए।

शिविर का समापन

दिनांक 22 मार्च, 2024। शिविर के अंतिम दिन प्रार्थना एवं योगाभ्यास के बाद समापन समारोह हुआ। समापन समारोह में विभिन्न परिषदों के विद्यार्थियों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम के अंतर्गत नृत्य, गीत एवं नाटक आदि प्रस्तुत किए। इसके बाद सभी परिषदों के अध्यक्षों ने अपने–अपने परिषदों की संक्षिप्त रिपोर्ट प्रस्तुत की। मुख्य अतिथि प्रो. एम.पी. शर्मा ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि समाजोपयोगी उत्पादक कार्य शिविर में शिक्षा के वे तत्व मौजूद हैं, जिन्हें कोई बाहर नहीं कर सकता। उन्होंने इस तरह के शिविर को अतिमहत्वपूर्ण बताते हुए कहा कि यह वह मंच है जहां विद्यार्थी स्वयं करके और एक दूसरे के साथ रहते हुए सीखता है। उन्होंने कहा कि समाज को

चारदिवारी के अंदर रहते हुए नहीं समझा जा सकता। इस तरह के शिविर विद्यार्थियों को समाज के प्रति संवेदनशील बताते हैं। प्रो. डीएन दानी ने कहा कि वर्तमान में शिक्षा में अनेक बदलाव हो रहे हैं। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 में भी कहा है कि शिक्षा ऐसी हो, जो परिवेश से जोड़कर दी गई हो। शिक्षा लोकल से ग्लोबल की ओर बढ़ने वाली होनी चाहिए। इसके लिए इस तरह के शिविर सबसे अच्छा उदाहरण है, जहां पर विद्यार्थी अपने आसपास के समाज से जुड़ता है और संवेदनशील नागरिक बनता है। समापन समारोह के पश्चात सामूहिक भोजन हुआ। भूगोल परिषद के प्रभारी डॉ. गिरीश शर्मा एवं कुमकुम सालवी के मार्गदर्शन में भूगोल परिषद के विद्यार्थियों ने भोजन की व्यवस्था की।

रिफ्रेशर प्रोग्राम में भागीदारी

दिनांक 21 मार्च, 2024। यूजीसी मालवीय मिशन–टीचर ट्रेनिंग प्रोग्राम के अंतर्गत एमएमटीटीसी–नीपा, नई दिल्ली एवं मोहनलाल सुखाड़िया विश्व विद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में 7 मार्च से 21 मार्च तक दो सप्ताह का ऑनलाईन रिफ्रेशर प्रोग्राम आयोजित हुआ। इस प्रोग्राम का विषय 'रिसर्च मैथड : एप्रोचेज एंड प्रेक्टिस' था। प्रोग्राम में महाविद्यालय से डॉ. मनीषा शर्मा, डॉ. मालचंद काला, डॉ. अख्तर बानो एवं डॉ. नैना त्रिवेदी ने भाग लिया। प्रोग्राम के

दौरान देशभर के विषय विशेषज्ञों ने रिसर्च मैथड के विभिन्न पक्षों जैसे अनुसंधान संप्रत्यय, आवश्यकता, चरण, वैज्ञानिक अनुसंधान, रिसर्च डिजाइन, संबंधित साहित्य, मात्रात्मक एवं गुणात्मक अनुसंधान, सेंपल, डाटा विश्लेषण, साफ्टवेयर का उपयोग, प्लेगरिज्म आदि पर चर्चा की। संभागियों को सत्रीय कार्य आबंटित किए गए। संभागियों के विषयवार समूह बनाए गए, जिसमें आबंटित सत्रीय कार्य– रिव्यू ऑफ लिटरेचर करके रिसर्च गेप की पहचान कर नवीन रिसर्च प्रपोजल तैयार किए तथा उनका प्रस्तुतीकरण किया गया। इनका दो बार मूल्यांकन भी किया गया। यह कार्यक्रम महाविद्यालय स्तर पर संस्थागत अनुसंधान तथा बी.एड., एम.एड. एवं पीएच.डी स्तर के विद्यार्थियों के मार्गदर्शन में सहायक होगा। इसके अतिरिक्त प्रतिदिन संभागियों को विषय विशेषज्ञों का परिचय, सत्र का प्रतिवेदन लेखन व धन्यवाद देने का दायित्व भी सौंपा गया। जिसे महाविद्यालय के इन चार संकाय सदस्यों ने प्रभावी तरीके से सम्पन्न किया।

पब्लिसिटी कमेटी का गठन

दिनांक 27 मार्च, 2024। महाविद्यालय में आगामी सत्रों में संचालित होने वाले अतिरिक्त पाठ्यक्रमों के लिए एक पब्लिसिटी कमेटी का गठन किया गया। कमेटी आरएससीआई, हॉबी क्लासेज़, छात्रावास एवं पुस्तकालय सुविधा के लिए आस–पास की संस्थाओं में संपर्क करेगी। इसके लिए प्लेमफ्लेट्स भी छपवाए गए हैं।

पुस्तकालय डिजिटलाईजेशन प्रगति

दिनांक 30 मार्च, 2024। महाविद्यालय के पुस्तकालय में पुस्तकों के स्केनिंग का कार्य प्रगति पर है। अभी तक 35 पुस्तकें स्केन की जा चुकी हैं। पुस्तकालय में बी.एड. एवं एम.एड. के विद्यार्थी अपना नियमित अध्ययन कार्य भी कर रहे हैं। बी.एड. के विद्यार्थियों ने अपना सत्रीय कार्य एवं परीक्षाओं की तैयारियां की तो एम.एड. के विद्यार्थियों ने अपना शोध संबंधी कार्य किया।

पुस्तक प्रकाशन

महाविद्यालय के प्राध्यापक डॉ. गिरीश शर्मा की पुस्तक 'शोध आरंभिक परिचय' का प्रकाशन हुआ। वे पुस्तक के संपादक मण्डल में शामिल हैं तथा प्रो. ए.बी. फाटक, प्रो. डी.एन. दानी, प्रो. हृदयकांत दीवान, रजनी द्विवेदी, विप्लव कुमार के साथ सहलेखक हैं। पुस्तक रावत पब्लिकेशन, जयपुर से प्रकाशित है।